विश्व-सम्बन्धी युक्ति की आलोचना
(Criticism of Cosmological Argument)

इस प्रकार हम देखते है कि विश्व संबंधी युक्ति इस विश्व को एक कार्य मानकर ईश्वर को उसका आवश्य-क कारण के रूप में मान लेती है और इस प्रकार यह युक्ति एक सफल व्याख्या प्रस्तुत करती है। पर इसके बाद भी इस युक्ति की अनेकों प्रकार से आलोचना

सर्वप्रथम इस युक्ति के अनुसार यह विश्व एक कार्य है और ईश्वर उसका आवश्यक कारण है। कार्य-कारण भाव सांसारिक वस्तुओं पर लागू होता है परंतु इसे ईश्वर पर लागू करना, जो अनुभव से परे है, उचित नहीं दिखता है। अतः यह तर्क अमान्य है।

इसकी दूसरी आलोचना रसेल ने की है। रसेल ने कहा है कि यह युक्ति सिर्फ अनवस्था दोष (Infinite regress) से बचने के लिए ईश्वर को मान लेती है। विश्व-रूपी कार्य की व्याख्या ईश्वर को कारण मानकर किया जाता है। यहाँ रसेल का कहना है कि कार्य-कारण भाव ईश्वर पर आकर रुक क्यों जाता है। आखिर ईश्वर पर कार्य-कारण की श्रृंखला रुक क्यों जाती है ?. कार्य-कारण की श्रृंखला से बचने के लिए ईश्वर की सत्ता को मान लेना असंगत है।

हॉस्पर्स (Hospers) महोदय ने भी विश्व-संबंधी युक्ति जिसे कार्य-कारण युक्ति कहा जाता है का खण्डन किया है। यदि विश्व की प्रत्येक वस्तु का कारण ईश्वर है तो प्रश्न उठता है कि ईश्वर का क्या कारण है। जो प्रश्न विश्व के संबंध में लागू होते है वे ही प्रश्न ईश्वर के प्रसंग में लागू किए जा सकते है।

हॉस्पर्स के शब्दों में इस आलोचना को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है - " इस तर्क के विरुद्ध सबसे सामान्य आपत्ति तो यह है कि यह अनवस्था दोष (Infinite regress) से ग्रस्त है।" हमें उन प्रश्नों का जिन्हें हम विश्व के संबंध में उठाते हैं, ईश्वर के भी संबंध में उठाने से कौन रोक सकता है।

विश्व - संबंधी युक्ति विश्व को आकस्मिक (Contingent) मानती है और इसके कारण के सिलसिले में ईश्वर की स्थापना करती है। आलोचकों ने इस युक्ति का विरोध करते हुए कहा है कि यह मानना कि विश्व की प्रत्येक वस्तु आकस्मिक है, उचित नहीं प्रतीत होता है। यदि किसी प्रकार यह मान भी लिया जाए तो यह कदापि नहीं सिद्ध होता कि विश्व अपनी संपूर्णता में आकस्मिक है। इस युक्ति की यह मान्यता है जो पूर्णतः गलत प्रतीत होता है।

Date 29/07/20
Page 4

विश्व-संबंधी युक्ति के अनुसार, विश्व एक आकस्मिक सत्ता है। इस आकस्मिक विश्व का कारण ईश्वर को ठहराया जाता है जो कि एक आवश्यक सत्ता (Necessary Being) है। अब यहाँ पर प्रश्न उठता है कि क्या आवश्यक सत्ता से आकस्मिक सत्ता का प्रादुर्भाव हो सकता है?. आवश्यक सत्ता से आकस्मिक सत्ता का प्रादुर्भाव मानकर विश्व संबंधी युक्ति ने भारी भूल की है। अतः यह युक्ति तर्कहीन एवं अमान्य है।

ह्यूम (Hume) ने कार्य-कारण युक्ति जो विश्व संबंधी युक्ति का एक प्रकार है का जोरदार खण्डन किया है चूँकि ह्यूम अनुभववादी दार्शनिक है इसलिए उन्होंने अनु-भव से प्राप्त ज्ञान को ही सत्य माना है। उनके अनुसार कारण और कार्य के बीच आवश्यक संबंध का ज्ञान अनुभव से नहीं होता है इसलिए कार्य-कारण नियम पर आश्रित

ईश्वर के अस्तित्व संबंधों प्रमाण अमान्य है। फिर, कार्य कारण युक्ति में विश्व को कार्य तथा ईश्वर को आदि कारण माना गया है। ह्यूम (Hume) का कहना है कि यदि प्रकृति को ही विश्व का आदि कारण मान लिया जाए तो क्या कठिनाई होगी। ईश्वर की अपेक्षा प्रकृति की मान्यता से भी अनवस्था दोष से मुक्ति संभव है।

शेष अगले भाग में।

Dr. Md Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.